द्वितीय अध्याय

असगर वजाहत के 'सात आसमान' का औपन्यासिक शिल्प

''असगर वजाहत के 'सात आसमान' का औपन्यासिक शिल्प''

2.1 उपन्यास का स्वरूप -

उपन्यास मानव को केंद्र में रखकर संपूर्ण वातावरण, समाज और देश का चित्रण करनेवाली सशक्त विधा है। उपन्यास मानव जीवन की छोटी-बड़ी घटनाओं को विशाल पटल पर स्थापित करता है। सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान बेवस्टर ने उपन्यास के बारे में लिखा है- ''उपन्यास एक ऐसा कल्पित विशालकाय तथा गद्यमय आख्यान है, जिसमें एक ही कथानक के अंतर्गत यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्रों का और उनके क्रिया-कलापों का चित्रण रहता है।''[1] कहना सही होगा कि उपन्यास की इसी व्याप्ति के कारण ही उपन्यास को आधुनिक जीवन का महाकाव्य माना जाता है।

2.2 शिल्प -

रचना में रोचकता, आकर्षण और प्रभाव के निर्माण के लिए साहित्यकार शिल्प का निर्माण करता है। शिल्प अंग्रेजी शब्द 'टेकनिक' का हिंदी अनुवाद है। शिल्प की परिभाषा करते हुए 'अंग्रेजी शब्दकोश' में लिखा है- ''कलात्मक कार्यवाही की रीति, जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्त होती है, तथा कलात्मक कारीगरी।''[2] इससे स्पष्ट है कि रचनाकार की रचना का कलात्मक रूप ही शिल्प है। रचनाकार अपने विषय की अभिव्यक्ति के लिए नई-नई शिल्प-विधियों का प्रयोग करता है।

2.3 औपन्यासिक शिल्प से तात्पर्य -

औपन्यासिक शिल्प एक जटिल किंतु आवश्यक प्रक्रिया है। अनेक उद्देश्यों से पूर्ण उपन्यास एक मनोरंजन का साधनमात्र न रहकर मानव को जीवनानुभूति से परिचित कराता है। इसलिए इसमें रोचकता तथा यथार्थता की पूर्ति के लिए शिल्प की अहं भूमिका होती है। उपन्यास

---

1. डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र - हिंदी के सात उपन्यास, से उद्धृत, पृ. 9
2. Hornoby A. S. - Oxford Dictionary of Current English, P. 1258

के शिल्प विधि निर्धारण में रचनाकार के दृष्टिकोण का महत्त्व होता है। पाश्चात्य विद्वान लब्बक के अनुसार ''उपन्यासकार का कथा या विषयवस्तु के साथ जो संबंध होता है, उसको वह जिस दृष्टिकोण से देखता है, वही अंत में उसके उपन्यास-शिल्प के स्वरूप को भी निर्धारित करता है।''[1] उपन्यास का उद्देश्य मानव जीवन को विभिन्न कोनों से देखना है। डॉ. नामवरसिंह शिल्प को सिर्फ अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं बल्कि उद्देश्य की पूर्ति में भी शिल्प की महत्ता स्थापित करते हैं। उनका मानना है कि ''साहित्य का शिल्प केवल रूप ही नहीं, बल्कि जीवन को समझने के भिन्न-भिन्न माध्यम हैं।''[2] कहना सही होगा कि शिल्प उपन्यास का अविभाज्य अंग है। शिल्प के कारण ही वह उपन्यास और उपन्यासकार साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बना पाता है।

उपन्यास जैसी जीवंत विधा और उसकी शिल्प-विधि में सदैव परिवर्तन होना स्वाभाविक है। डॉ. जवाहर सिंह उपन्यास की शिल्प-विधि में इस परिवर्तन के मुख्यतः दो कारण मानते हैं- ''एक तो नवीन विषय-वस्तु की आंतरिक मांग और दूसरा- इसके लिए परपंरित अभिव्यक्ति माध्यमों की अपूर्णता या असमर्थता।''[3] इससे स्पष्ट है कि युगानुरूप औपन्यासिक शिल्प में परिवर्तन होता है। संक्षेप में कहना सही होगा कि कृति को साकार रूप देने में जिन विधियों, ढंगों, तरीकों और रूढ़ियों का प्रयोग किया जाता है वे सारी बातें शिल्प के अंतर्गत आती हैं। इन बातों में समय के साथ परिवर्तन होना स्वाभाविक है। लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार असगर वजाहत ने अपने 'सात आसमान' उपन्यास को शिल्प-विधि के सारे तत्त्वों के अनुसार ढालने का प्रयास किया है। यहाँ 'सात आसमान' के औपन्यासिक शिल्प के विभिन्न आयामों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है।

2.4 शीर्षक -

शीर्षक उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। शीर्षक का आकर्षक तथा उसका कथ्य के साथ गहरा संबंध होना आवश्यक माना जाता है। असगर वजाहत के उपन्यास 'सात आसमान' की विशिष्टता है कि यह आकर्षक होने के साथ-साथ कौतुहलपूर्ण भी है। सबसे पहले 'सात

---

1. Collins Norman - The Graft of Fiction, P. 251
2. डॉ. नामवरसिंह - कहानी : नई कहानी, पृ. 63
3. डॉ. जवाहर सिंह - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प-विधि, पृ. 9

आसमान' इस शब्द के पीछे निहित होनेवाली भावना का अंदाजा लगाना जरूरी लगता है। 'सात आसमान' उपन्यास पूर्णतः मुस्लिम समाज जीवन से संबंधित है। मुस्लिम समाज में 'सात आसमान' इस शब्द की एक विशेष धार्मिक मान्यता है। कुरान को आधार मानकर मुस्लिम लोगों का मानना है कि धरातल से ऊपर सात आसमान है। हर आसमान एक अलग-अलग धातु से बना है जैसे- पहला आसमान सोने का, दूसरा चांदी का, तीसरा पितल का आदि। इन सात आसमानों के ऊपर अल्लाह का आसन होता है जिसपर वह विराजमान होता है। कहना गलत न होगा कि उपन्यास के 'सात आसमान' इस शीर्षक पर इस घटना का अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ा होगा। उपन्यास के कथ्य को देखने पर भी इस बात को पुष्टि मिलती है।

उपन्यास कथ्य की दृष्टि से देखेंगे तो 'सात आसमान' उन सात पीढ़ियों का प्रतीकात्मक रूप है, जिन्होंने अपने प्रतापी, जिद्दी और दूरदर्शी वृत्ति से अपने आनेवाले पीढ़ी के लिए विशाल भवन और जायदादों का निर्माण किया है। उन सात पीढ़ियों के जीवनप्रवाह में आ रहे परिवर्तन के साथ उन सात पीढ़ियों का सातवाँ आसमान (सबसे ऊँचा) याने आज की वर्तमान पीढ़ी की जीवनशैली को भी वास्तव रूप में चित्रित करने के उद्देश्य से इस उपन्यास का सृजन हुआ है। अतः 'सात आसमान' सदियों से चले आ रहे मानव जीवन प्रवाह का प्रतीक है। पुराने जीवन प्रवाह में ही न उलझकर उपन्यासकार ने नई वर्तमान पीढ़ी का भी चित्रण करके इस उपन्यास पर आधुनिकता की मोहर लगा दी है।

2.5 कथावस्तु -

औपन्यासिक शिल्प के अंतर्गत कथावस्तु को प्रमुख और अनिवार्य तत्व माना जाता है। श्रृंखलाबद्ध, गतिशील और कौतुहलपूर्ण कथानक के कारण उपन्यास वैशिष्ट्यपूर्ण बन जाता है। कथा अपने मूल रूप में अनेक अवस्थाओं, प्रसंगों, मार्मिक स्थलों तथा घटनाओं का विवरण मात्र होती है। "उपन्यासकार अपनी प्रतिभा और कल्पना के योग से इन बिखरी हुई घटनाओं को कार्य-कारण-संबंध में नियोजित कर उपन्यास के सुसंबद्ध कथानक के रूप में ढाल देता है।"[1] कथानक में यथार्थ मानव जीवन के समांतर एक अलग काल्पनिक किंतु विश्वसनीय विश्व का निर्माण होता है। समय के परिवर्तन के साथ शिल्प की अति आसक्ति के कारण कथा-

---

1. डॉ. जवाहर सिंह - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प-विधि, पृ. 14

विधान की उपेक्षा हो रही है। नए उपन्यासकारों ने घटनाओं की अपेक्षा स्वप्नों, संकेतों और रूप को ही अधिक प्रश्रय दिया परिलक्षित होता है। तात्पर्य कथा-तत्त्व में समयानुरूप परिवर्तन हो रहा है।

सन् 1996 में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास भारतीय मानव-जीवन के परिवर्तन का आईना है। इसमें भारतीय मानव की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति और गति उजागर हुई है। उपन्यासकार ने परंपरागत मान्यताएँ, अतीत की गौरवगाथा, पारिवारिक संघर्ष, अतीत-वर्तमान तुलना आदि के द्वारा भारतीय मानव-जीवन की आत्मा को वाणी देने का काम किया है। पाँच भागों में विभाजित प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु संक्षिप्त में इस तरह है-

उपन्यास में दो खानदान की अनेक पीढ़ियों का मोहक चित्र उभरकर आया है। कथा-नायक अपने अम्माँ और अब्बा के साथ छुट्टियों में ननिहाल जाते थे, जो अम्माँ का मैका है। उस खानदान के वारिस मौतमुद्दौल्ला अठरवीं शती के आसपास अवध के दबार में वजीर थे। वह नवाब सयादत अली खाँ को शराब और सुंदरियों में डुबोकर सारी सत्ता के सरोताज बन गए थे। नवाब को भांग और शराब के नशे से महिनों होश न आता था। होश में आते और पूछते कि शासन का इंतिजाम कैसा चल रहा है तो मौतमुद्दौला शराब का जाम हाथ में लेकर कहते थे "हुजूर, ये जामे-सेहत नौश कर ले तो बंदा अर्ज करे।"[1] कंपनी बहादुर और रेजिडेंसी पर भी उन्होंने अपनी पकड़ मजबूत की थी। बर्मा की लड़ाई में मौतमुद्दौला कंपनी से इस शर्त के साथ एक करोड़ रुपए मददस्वरूप देते हैं कि "कंपनी बहादुर मौतमुद्दौला की जान, माल और इज्जत की हिफाजत का जिम्मा लेती है।"[2] यहाँ पर उनकी दूरदर्शी वृत्ति का परिचय मिलता है, जिसके कारण उन्हें अंत में जीवदान मिलता है।

नवाब के पश्चात् उनके एकलौते शहजादे नसीरूद्दौला को मौतमुद्दौला अपने हाथ की कठपुतली समझते थे। उन्होंने यह सोचा कि "शहजादे अगर बादशाह भी बन जाते हैं, तो उनकी गिरफ्त में उसी तरह होंगे जैसे पिंजड़े में चिड़िया होती है।"[3] लेकिन जब शहजादे और

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 121
2. वही, पृ. 136
3. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 137

बेगमों ने अपनी सारी सत्ता और जायदाद मौतमुद्दौला के हाथ में जाते देखा तो किसी तरह लाट साहब से कहल्र उन्हें कैद करवाते हैं। शहजादे उनकी सारी संपत्ति जब्त करके फाँसी पर चढ़ा देने का आदेश देते हैं। इस वक्त मौतमुद्दौला लाट साहब को उस शर्त की याद दिलाते हैं, जो उन्होंने बर्मा की लड़ाई में कबूल की थी। अंत में फैसला यह हुआ कि मौतमुद्दौला कुछ जुर्माना भरकर लखनऊ छोड़कर चले जाए। जाते वक्त वह अपनी सारी संपत्ति ले जा सकते हैं। इस आदेश के अनुसार बीस साल तक एक तरह से अवध शासन के बादशाह ही बन बैठे और संपत्ति को ईश्वर माननेवाले मौतमुद्दौला के पास जाते वक्त अमाप संपत्ति थी। छः महीने इसी सोच में निकल गए कि इतनी सारी संपत्ति को कहाँ और कैसे ले जाया जाए। सैकड़ों छकड़े, हजारों घोड़े, ऊँट और हाथियों के मदद से तथा हजारों लोगों, गाड़ियों, पालकियों और सारी संपत्ति के साथ वह ननिहाल में बस गए। मौतमुद्दौला ने आते ही दस एकड़ क्षेत्र में स्थित सेठ रामनारायण की सफेद कोठी खरीदी और अपनी बेटी और दामाद के लिए महल बनवाकर अनेक जमीनें खरीदी।

सैकड़ों सालों बाद कथानायक की अम्माँ के रिश्तेदार उसी सफेद कोठी और महल में रहते हैं जो उन्हें विरासतस्वरूप मिल गए हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि आज महल और सफेद कोठी की दयनीयता देखने लायक बन गई है। दस एकड़ बाग एक गुंजान मोहल्ले में बदल चुका है तो सफेद कोठी और महल की विड़ंबना को देखकर पुरखों की आत्मा तड़प रही होगी। ऐयाशी के लिए पैसे खर्च करना उन लोगों की आदत बन गई है। पैसा न होता है तो जमीन का एक टुकड़ा या कोई कीमती चीज बेच डाली जाती है। इस तरह लेखक ने इस खानदान के इतिहास के साथ इतिहास की वर्तमान यातना को ब-खूबी के साथ चित्रित किया है। यही पर एक खानदान की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में कथानायक के खानदान के गौरवशाली इतिहास का भी चित्रण हुआ है। कथानायक के खानदान के पहले वारिस सैयद इकरामुद्दीन मुगल बादशाह हुमायूँ के साथ ईरान से हिंदुस्तान आए थे। वह सूफी थे और जंग में जब तलवार चलाते थे तो लगता था कि सैकड़ों तलवारे चल रही हो। अंत में हज की यात्रा करते वक्त उनकी मृत्यु हो जाती है। इकरामुद्दीन के बाद उनके बेटे अलीकुली खाँ और बहादुर खाँ ने दरबार में अपने लिए जगह बनाई थी। अलीकुली खाँ की दो पीढ़ियों ने चैन से जीवन व्यतीत किया, लेकिन उनके परपोते मुहम्मद

तकी खाँ औरंगजेब के जमाने में दरबारी शिया और सुन्नी दुश्मनी से तंग आकर दिल्ली से दूर जाकर अपनी बाकी जिंदगी बीता देते हैं।

औरंगजेब के मरने के बाद दिल्ली के हालात इतने बिगड़े की सिपाही तलवारें और ढालें बेचकर जीवनयापन करने लगे। रोजगार मिलना कठीन हो गया था। उस वक्त सभी लोगों की तरह मुहम्मद तकी खाँ के बेटे जैनुल आब्दीन खाँ भी लखनऊ गए। वहाँ पर नवाब असिफुद्दौला का राज था। जैनुल आब्दीन खाँ की सादगीपूर्ण वृत्ती के कारण नवाब ने उन्हें अनेक पदों का अधिकारी बना दिया। जैनुल आब्दीन खाँ "हलाल की कमाई के अलावा एक छदाम भी गवारा न करते थे और उन्होंने अपनी ब्याही औरत के अलावा किसी और के साथ कभी हमबिस्तरी नहीं की।"[1]

जैनुल आब्दीन खाँ के दस लड़के थे। उनके दो लड़के यानी सबसे बड़े अली खाँ और सबसे छोटे बेटे मुहम्मद खाँ ने अपने बाप की जायदाद को संभाला था। बाकी बेटे इधर-उधर चले गए थे। बक्सर की लड़ाई में नवाब कंपनी से हार गया और उसके दंड़स्वरूप यह इलाका उसे कंपनी को देना पड़ा, लेकिन वहाँ के चकलेदार अली खाँ ही रहे। अली खाँ को कोई बेटा नहीं था। उन्होंने अपने छोटे बेटे मुहम्मद खाँ को गोद ले लिया। "मुहम्मद खाँ सीधे-साधे आदमी थे और जिंदगी के दिन सुकून से काट देने पर विश्वास करते थे।"[2]

उस वक्त मेरठ के बागी फौजियों ने दिल्ली के ऊपर कब्जा कर अंग्रेजों की हत्याएँ की। कानपुर और इलाहाबाद में भी बगावत हो गई लेकिन अंग्रेजों के सामने किसी का क्या कुछ चल सकता है ? अंग्रेजों की नियोजनबद्ध फौज ने नाना साहब पेशवा की फौज को हराकर इलाहाबाद के किले पर फिर से कब्जा किया और बागियों को फाँसी पर लटकाकर सारा शहर ध्वस्त कर दिया। मुहम्मद खाँ अपनी सारी जायदाद और किला छोड़कर जमुना के किनारे जहाँ उनकी जागीर का आखरी गाँव था वहाँ चले गए। चार महिने लौटने के बाद उन्होंने वापस आकर देखा कि "फिरंगियों ने किले को तोपों से उड़ा दिया है। किला पूरी तरह मिस्मार हो चुका था।

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 55
2. वही, पृ. 59

फिरंगी फौजे जो नहीं लूट सकी थी, वो गाँव देहात के लुटेरों ने लुट लिया था।''[1] मुहम्मद खाँ ने ध्वस्त किले के जगह पर दो खपरैले और एक छप्पर डालकर जीवनयापन शुरू किया।

मुहम्मद खाँ के बेटे अहमद हुसैन खाँ ऐयाश थे किंतु उनके बेटे रजी हुसैन खाँ बहुत समझदार थे। उन्होंने जायदाद अपने हाथ में आते ही उसका विकास किया। उन्हें तीन बेटे थे। उसमें से बड़े बेटे पागल थे, जिन्हें जायदाद के कारण जहर देकर मार दिया जाता है। दूसरे बेटे जत्तन मियाँ घुड़सवारी और पंजा लड़ाने के शौक में डूब गए थे तो उनके तीसरे बेटे अब्बा मियाँ जो कथानायक के दादाजी हैं, सोच-समझकर चलनेवाले आदमी थे। कुछ दिनों में वह इलाके के जाने-माने जमींदार रईसों में गिने जाते हैं।

वह जमाना स्वाधीनता का नशा लिए हुए था, लेकिन जमींदार लोगों के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था। स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा खत्म होती है। अब्बा मियाँ के लिए जमींदारी ही सब कुछ थी ''वही सैकड़ों सालों से पुरखों की बची-खुची जायदाद थी। उसी से उनका सम्मान था। उसी से उनका नाम था।''[2] जमींदारी चली जाने के बाद सारे नौकर-चाकर निकाले जाते हैं। जो घर कभी हर वक्त चहल-पहल से गूँज उठता था वही घर खंडहर जैसा बन जाता है। इस बदलाव को अब्बा मियाँ सहन न कर पाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। अब्बा मियाँ के मृत्यु के बाद सारी जिम्मेदारी अब्बा पर आती है। अब्बा ने जमीन कसने के लिए अनेक योजनाएँ पानी की तरह पैसा बहाकर मंजूर करवाई किंतु किसी का साथ न होने और सारे लोगों से धोखा खाने की मजबूरी में वह हर काम में असफल होते हैं।

पढ़ाई पूरी होने के बाद कथानायक को बंबई में और उनके छोटे भाई को दिल्ली में नौकरी लगती है। वह बीवी-बच्चों के साथ शहरों में रहने लगते हैं। अब्बा की यह आकांक्षा है कि दोनों में से एक लड़का उनके पास रहे ताकि परंपरा का निर्वाह होगा और घर उजड़ने से बच जाएगा। लेकिन कथानायक और उनके भाई शहर की अनेक संभावनाओं से भरी जिंदगी छोड़कर घर आना पसंद नहीं करते। इसी बीच अम्माँ को कॅन्सर की बीमारी होती है। बीमारी का सही वक्त पर इलाज न होने की वजह से अम्माँ की मृत्यु होती है। उस वक्त अब्बा बिलकुल अकेले पड़

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 62
2. वही, पृ. 154

जाते हैं। उनकी अपने बेटों के पास रहने की इच्छा अंत तक अपूर्ण ही रहती है। अंत में पत्नी की मृत्यु के गम में डूबे, अपने बेटों से नाउम्मीद होकर और इतिहास की गौरवशाली परंपरा का निर्वाह करनेवाले अपने खानदान को छिन्न-विछिन्न होते देखकर अब्बा की मृत्यु होती है।

2.5.1 कथावस्तु की समीक्षा -

'सात आसमान' अपने अनूठे शिल्प के कारण हिंदी उपन्यास साहित्य में चर्चित है। आत्मकथात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में एक कथा के साथ अनेक गौण कथाओं और घटनाओं का समावेश हुआ है। घटना वैविध्य और पात्रों की अधिकता के कारण उपन्यास में बिखराव आया है लेकिन इसके कारण कथा की समृद्धता में कोई बाधा नहीं आई है। हुमायूँ के आगमन की घटना से शुरू होनेवाला यह उपन्यास सन् 1960 तक के भारतीय मुस्लिम परिवार और उसके सामाजिक परिवर्तीत होती जा रही घटनाओं का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करता है। लेखक एक घटना का वर्णन करते हुए पात्रों का परिचय देने लगता है और कथा आगे बढ़ने लगती है। मुस्लिम समाज-जीवन का चित्रण लेखक ने आत्मीयता से किया है। उपन्यास के सारे पात्र लेखक के अपने रिश्तेदारों में से हैं, लेकिन यह अपनापन उपन्यासकार पर हावी नहीं हुआ है।

उपन्यास में कुछ रचनागत कमियाँ भी परिलक्षित होती हैं। जिन लोगों का कथा में आगे संबंध नहीं है उनका भी लेखक ने वर्णन किया है। अंतिम खंड में मुंशीजी का चित्रण हद से ज्यादा हुआ है जिससे लगता है कि कथा में जान-बूझकर बिखराव लाया जा रहा है। मुंशीजी के अति चित्रण के अंत में स्वयं लेखक ने "बहरहाल, यहाँ मकसद मुंशीजी का जीवन-चरित्र लिखना नहीं है"[1] कहकर अपनी गलती को सुधरा है। यही बात प्रसंगों के विश्वसनीय बनाने के संबंध में है। शुजा आगा का पाखाने जाने के लिए किए जानेवाली तैयारी का चित्रण अतिशयोक्तिपूर्ण तथा काल्पनिक लगता है। उपन्यास में हर जगह आनेवाले छोटे-से-छोटे पात्र का भी परिचय दिया है, जिसके लिए अनेक पृष्ठ इस्तमाल हुए हैं। कथानायक उपन्यास में कम चित्रित हुआ है। उसकी अधिक उपस्थिति कथा को और जानदार बना सकती थी।

उपरोक्त चंद कमियों को हम नजरअंदाज करते हैं तो असगर जी की यह औपन्यासिक कृति अपने शिल्प और नए प्रयोग के कारण कुछ-कुछ महाकाव्यात्मक उपन्यास की

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 174

तरह उत्तरोत्तर चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती है। इतिहास के साथ-साथ अंत में जिस अलगाव, विखंड़न या यातना-बिंदू की बात की गई है वह कृति में सर्वाधिक प्रभावशाली है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि लेखक की यह एक सर्वांगपूर्ण और साहसिक कृति है। परंपरागत ढाँचे को तोड़कर नए प्रयोग के कारण यह उपन्यास हिंदी साहित्य विधा में अपनी एक अलग पहचान रखता है।

2.6 पात्र तथा चरित्र-चित्रण -

उपन्यास के शिल्पगत अध्ययन में पात्र तथा चरित्र-चित्रण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पात्रों के माध्यम से ही उपन्यासकार अपनी जीवनानुभूति को प्रस्तुत करता है। असगर वजाहत लिखित 'सात आसमान' उपन्यास में प्रधान, सहायक पात्रों के साथ गौण पात्रों की भरमार दृष्टिगोचर होती है। इन सभी पात्रों का वर्णनात्मक शैली में चित्रण हुआ है। अतः इसमें से कुछ प्रधान, सहायक और गौण पात्रों का यहाँ संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है -

2.6.1 प्रमुख पात्र -

'सात आसमान' उपन्यास के प्रमुख पात्रों में स्वयं कथानायक, अब्बा मियाँ और अब्बा का समावेश होता है। इन तीन प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का संक्षिप्त विवेचन-विश्लेषण इस तरह है-

कथा-नायक -

उपन्यास में इतने पात्रों की सेना है फिर भी मूल कथानक का ताना-बाना नायक के चरित्र पर ही केंद्रित हुआ है। उपन्यास में नायक आधुनिक नई पीढ़ी का प्रतिनिधि पात्र है जो अपनी परंपरागत मिट्टी को छोड़कर खुले आसमान में पंख फैलाने की उमंगों से भरा है। उसे लगता है कि परंपराओं को तोड़े बिना स्वविकास असाध्य है। स्वातंत्र्योत्तर काल में परंपरा से चली आयी जमींदारी प्रथा का उन्मूलन होता है। जमींदार परिवार में पले-बढ़े नायक को लगता है कि अब हमें हमारे विकास के कुछ नए रास्ते तराशने होंगे। इसलिए नायक अपना घर-परिवार, माँ-बाप, जमीन, गाँव सभी को छोड़कर शहर में नौकरी के लिए जाता है। एक बार शहर में बसा हुआ नायक अपने परिवार से कटता ही जाता है। इतने बड़े परिवार में अकेले रहने के लिए अभिशप्त अब्बा के बार-बार बुलाने के बाद भी शहर की अपनी अच्छी नौकरी और अनेक अवसरों से भरा जीवन

छोड़कर नायक घर नहीं जा सकता। उसके दिल में हमेशा यह कचोट रहती है कि चाहकर भी वह अपना हरा-भरा शहरी जीवन छोड़कर अपने घर माँ-बाप की परवरिश और घर को मिटने से बचाने के लिए नहीं जा पा रहा है। अपनी व्यथा को प्रस्तुत करते हुए स्वयं नायक कहता है कि एक बार शहर में बसा हुआ आदमी स्वार्थी हो जाता है। "उसकी आँखों में हर चीज की एक कीमत हो जाती है। वह ऐसे छलावों का निर्माण करता है और उन पर विश्वास करता है जो जीवन-भर उसका पीछा नहीं छोड़ते। वह हमेशा आगे की तरफ देखता है और अपार संभावनाओं में जीना उसकी मजबूरी बन जाता है।"[1] उपरोक्त उद्धरण से गाँव से कटे हुए शहरवासियों की मजबूरी की मार्मिकता उद्घाटित हुई है। उपन्यास के अंत में नायक के मानसिक द्वंद्व का सबसे ज्यादा प्रभावकारी चित्रण हुआ है। अपने माँ-बाप की परवरिश या शहरी विकासदायी जिंदगी इन दो पाटों के बीच फँसे नायक का अंतर्द्वंद्व ही मुख्य कथावस्तु का केंद्रबिंदू रहा है।

अब्बा मियाँ -

अब्बा मियाँ कथा-नायक के दादाजी हैं। कथा-विस्तार की दृष्टि से उपन्यास में वही सबसे प्रमुख पात्र है। अब्बा मियाँ के चरित्रांकन में लेखक को अच्छी सफलता मिली है। अब्बा मियाँ को अपनी विरासत से जमींदारी मिली थी। उनका परिवार काफी बड़ा था और वह उस परिवार के प्रमुख थे। घरवालों और रिश्तेदारों से ही नहीं अपने नौकरों तक वह सभी के साथ अच्छा बर्ताव करते थे। "उनके दोस्तों और दुश्मनों की बड़ी तादाद थी। अपने दोस्तों पर जान छिड़कते थे।"[2]

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद जमींदारी प्रथा नष्ट हुई जिसके परिणामस्वरूप अब्बा मियाँ के हाथ से जमींदारी छिन जाती है, जिसका उन्हें जबरदस्त धक्का लगा। जमींदारी खत्म होने के बाद वह काँग्रेस के दुश्मन बन गए। बची हुई जमीन अपने बेटे अब्बा के भरोसे छोड़कर उन्होंने बीड़ी का कारखाना लगवाया, जिसमें उन्हें घाटा ही बर्दाश्त करना पड़ा।

पैसों की तंगी के कारण जीवन के अंतिम दिनों में अब्बा मियाँ के सभी पुराने नौकर निकाले जाते हैं, जिसका उन्हें अतीव दुःख होता है। पोते नौकरी के लिए शहर में जाते हैं। आखरी

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 200
2. वही, पृ. 31

दिनों में बदलती परिस्थितियों के कारण वह अधिक कमजोर हो जाते हैं। लेखक लिखते हैं- ''बुढ़ापे, बीमारियों, पैसे की कमी और इतने ज्यादा बदल गए हालात ने अब्बा मियाँ को कमजोर कर दिया था।''[1] इस तरह बदलती परिस्थितियों तथा बिखरते परिवार की त्रासदी को सहते हुए अंत में उनकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार अब्बा मियाँ के द्वारा युगानुरूप मानव जीवन में हो रहे परिवर्तन का चित्रण अंत तक पाठकों पर गहरा प्रभाव डालता है।

अब्बा -

अब्बा जमींदार अब्बा मियाँ के बेटे और कथा-नायक के पिताजी हैं। उपन्यास में अब्बा एक सीधे-साधे आदमी के चरित्र के रूप में चित्रित हुए हैं। जब तक अब्बा मियाँ जिम्मेदारी निभाते थे, तब तक अब्बा बेफिक्र थे। जैसे ही शादी होती है, घर और जमीन की सारी जिम्मेदारी अब्बा के सर पर आती है। अब्बा समाज में उठने-बैठने और बाहर के व्यवहार से घबराते थे, जिसके कारण उन्हें अनेक समस्याओं से टकराना पड़ता है। अब्बा को खेती करने में रुचि नहीं थी। अपने पिताजी की तरह वह कोई उद्योग-धंदा भी नहीं कर सकते थे। ''उन्हें लगता था कि अगर कोई कारोबार करेंगे तो वह फेल हो जाएगा क्योंकि उन्हें उसका तजुरबा नहीं है।''[2]

आय का कोई स्रोत दिखाई न देने के बाद अब्बा अपनी खेती करने का ही फैसला करते हैं। अनेक योजनाओं में पानी की तरह पैसा बहाने के बाद भी अब्बा को दुर्भाग्यवश खेती में सफलता नहीं मिलती। जमीन में कोई फायदा न होते देखकर अनेक लोगों ने उन्हें जमीन बेचने की सलाह दी, जिस पर नाराज होकर वह कहते हैं- ''यही तो एक चीज है मेरे पास। इसे भी बेच दूँगा तो क्या रहेगा।''[3]

अब्बा के अज्ञान और भोलेपन का फायदा उठाकर घर के नौकरों से लेकर कार्यालय के अधिकारियों तक सभी लोग उन्हें धोखा देते हैं। जमीन पर भरोसा न करके अब्बा अपने दोनों बेटों की शिक्षा पूरी करते हैं। शिक्षा पूरी होने के बाद कथा-नायक और उनके छोटे भाई शहरों में नौकरी के लिए जाते हैं और वही बस जाते हैं। अब्बा के बार-बार बुलाने के बाद भी वह घर नहीं

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 196
2. वही, पृ. 159
3. वही, पृ. 192-193

आते हैं। अम्माँ और अब्बा की मृत्यु के बाद अब्बा बिल्कुल अकेले रहते हैं और अकेलेपन में ही उनकी मृत्यु हो जाती है। इस तरह अब्बा उपन्यास के सर्वाधिक सीधे-सादे चरित्र हैं जो सभी से धोखा खाते हैं लेकिन अपने तत्त्वों को नहीं छोड़ते। उपन्यास के अंत में अब्बा के अकेलेपन का बड़ा ही प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है।

इस प्रकार इस उपन्यास में इन तीन प्रमुख पात्रों की योजना से हम मानव जीवन और मानव संबंधों में आ रहे परिवर्तन को देखते हैं।

2.6.2 सहायक पात्र -

अम्माँ -

नायक की माँ-अम्माँ को उपन्यास में एक आदर्श माता, पत्नी, बहू के रूप में चित्रित किया है। अम्माँ खेती पर विश्वास न करते हुए अपने बच्चों की शिक्षा पूरी करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होती है। वह अपने पति के काम में भी मदद करती थी। अब्बा की ज्यादा शिक्षा न होने के कारण अम्माँ ही हिसाब-किताब के हर काम में सावधानी बरतती थी। उपन्यास में अम्माँ नए युग की प्रगतिशील नारी के रूप में उभरकर आई है। वह पुराने रीति-रिवाजों की दासता को ठुकराकर घर की चारदिवारों से बाहर आती है और अब्बा के हर व्यवहार में उनकी मदद करती है। इस प्रकार एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित अम्माँ, उपन्यास की एक महत्त्वपूर्ण पात्र है।

मौतमुद्दौला -

अम्माँ के खानदान के वारिस मौतमुद्दौला मुगल शासन के अंतिम काल के नवाब इकरामुद्दीन के शासन में वजीर थे। उन्होंने कूटनीति से शासन की अमाप संपत्ति जमा की थी। उपन्यास में उनका वास्तवदर्शी चित्रण हुआ है। विश्वनाथ त्रिपाठी जी लिखते हैं- "मौतमुद्दौला लेखक की माँ के पूर्वज हैं लेकिन उनकी किसी तिकड़म, स्वार्थपरता, षड़यंत्र को छिपाया नहीं गया है, उन्हें क्लोजअप में चित्रित किया है।"[1] अम्माँ का मायका ननिहाल का महल, विशाल सफेद कोठी, बाग सभी मौतमुद्दौला ने ही खरीदी थी जो अम्माँ के खानदान को विरासत के रूप में मिली है। मौतमुद्दौला दूरदर्शी खिलाड़ी थे। हारी हुई बाजी जीत लेते थे। अंत में सजा होने पर भी वह सजा से बच निकलते हैं।

---

1. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस' मासिक पत्रिका, फरवरी, 1999, पृ. 88

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह सहायक पात्र उपन्यास की घटना को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में सहायता करते हैं।

2.6.3 गौण पात्र -

डॉ. विक्टोरिया -

यह विदेशी महिला डॉक्टर है। डॉ. विक्टोरिया यह पात्र पाश्चात्य संस्कृति के प्रतीक के रूप में उपन्यास में उपस्थित हुआ है। शराब और सिगरेट की शौकीन है। मुक्त यौनाचार पर विश्वास करती है।

लक्खू मियाँ -

लक्खू मियाँ शहर के नामी रइसों में से एक हैं। शहर के पहले पदवीधर और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनकी तरफ डॉ. विक्टोरिया आकर्षित होती है। लक्खू मियाँ उपन्यास में पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करनेवाले पात्र के रूप में चित्रित हुए हैं।

हुजूर -

हुजूर अब्बा मियाँ के पिताजी हैं। बहुत बड़े जमींदार होने पर भी उन्हें किसी प्रकार का अहम् नहीं है। वे सादगीपूर्ण और अच्छा जीवन जीने के पक्ष में हैं।

बड़े आगा -

कीमती घड़ियों और गाड़ियों के शौकीन बड़े आगा जवानी में ऐयाशी के लिए सब कुछ बेच डालते हैं। बूढ़ापे में उनकी दयनीय अवस्था में मृत्यु होती है। उनकी दर्दनाक मृत्यु से व्यथित होकर लेखक लिखते हैं- ''मिटे नामियों के निशाँ कैसे-कैसे।''[1]

जत्तन मियाँ -

जत्तन मियाँ मस्तमौला किस्म के आदमी हैं। उन्हें कल की चिंता नहीं रहती। उद्देश्यहिन जीवन जीनेवाले जत्तन मियाँ अंत में पत्नी और बेटे द्वारा जायदाद से बेदखल कर दिए जाते हैं।

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 217

सत्ती -

सत्ती जत्तन मियाँ की रखैल है। वह जत्तन मियाँ से बेहद प्यार करती है। जत्तन मियाँ की मृत्यु के बाद अपनी दुर्गती टालने के लिए ''सत्ती ने चूड़ियाँ पीसकर खा ली और मर गई।''[1]

इनके साथ-साथ और भी कई गौण पात्रों का सृजन उपन्यास में हुआ है। जैसे- अब्बू साब, अँगनू, मुश्ताक, बकरीदी, जाफर, यासीन मियाँ, जुबैदा, मुन्नीबाजी, मुंशी, मैकू, सैयद इकरामुद्दीन, अलीकुली खाँ, बहादुर खाँ, बैरम खाँ, दाराशिकोह आदि दर्जनों गौण पात्र हैं जो उपन्यास के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं।

संक्षेप में कहना सही होगा कि इस उपन्यास में प्रत्येक पात्र का सृजन प्रसंगानुकूल और सौद्देश्यपूर्ण रहा है। इस उपन्यास के सभी पात्र उपन्यास में गतिशीलता और प्रभावोत्पादकता लाते हैं। अत्यंत सहज, सुंदर शैली में उपन्यासकार असगर वजाहत जी ने उपन्यास के पात्रों को प्रस्तुत किया है। अतः 'सात आसमान' उपन्यास की पात्र-योजना अत्यंत सफल, संयत तथा रोचक रही है।

2.7 कथोपकथन -

स्वाभाविकता लाने और वातावरण निर्मिति करने के लिए उपन्यास में कथोपकथन का होना आवश्यक माना जाता है। कथोपकथन संकल्पना की विस्तृत जानकारी के बारे में डॉ. रामलखन शुक्ल जी की टिपण्णी दृष्टव्य है- ''सफल लेखक अपने पात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में डालकर उनके चरित्रों के विभिन्न स्वरूपों को पाठकों के सामने रख देता है। मन की गुत्थियों और भावनाओं को सुलझाने और प्रकाशित करने का साधन भी कथोपकथन ही है।''[2] उपरोक्त उद्धरण के आधार पर कहना सही होगा कि कथोपकथन ऐसा तत्त्व है, जिससे पात्रों की मानसिकता का विश्लेषण होता है। परिणामतः उपन्यास का उद्देश्य अधिक मात्रा में स्पष्ट होता है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने अब्बा - अम्माँ, जहाँआरा बेगम - जत्तन मियाँ, डॉ. विक्टोरिया- लक्खू मियाँ, सत्ती- मुंशीजी, अब्बा मियाँ- अब्बा, मुनव्वर आगा- नाना, मुश्ताक-

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 105
2. डॉ. रामलखन शुक्ल - हिंदी उपन्यास कला, पृ. 28

उनका बेटा, अब्बा- कथानायक आदि के संवादों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करके अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यहाँ पर 'सात आसमान' उपन्यास के कुछ संवादों के उदाहरण प्रस्तुत हैं। रखैल सत्ती के प्रति आसक्त जत्तन मियाँ और पत्नी के अधिकारों से वंचित जत्तन मियाँ की पत्नी जहाँआरा बेगम का एक संवाद दृष्टव्य है-

''जत्तन मियाँ ने उनसे पूछा- 'क्यों क्या है ?'

'एक बात बताइए', बड़ी बहू धीरे से फुसफुसाई।

'पूछो ? क्या हैदराबाद जाना चाहती हो ?'

'नहीं', वे बोलीं।

'फिर क्या बात है ?'

'सत्ती क्या मुझसे ज्यादा खूबसूरत है ?' ''[1]

उपरोक्त कथोपकथन से जहाँआरा बेगम की मानसिक व्यथा के साथ-साथ उसका अंतर्द्वंद्व स्पष्ट होता है। जहाँआरा बेगम की अनेक दिनों से दबी हुई भावनाओं को उपन्यासकार ने इस कथोपकथन के द्वारा वाणी दी है। यहाँ से ही जहाँआरा बेगम का अपने पति के खिलाफ संघर्ष शुरू होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में नाना और मुनव्वर आगा के बीच हुए संवाद भी मुनव्वर आगा के अंग्रेजी शिक्षा के प्रति अज्ञान पर प्रकाश डालते हैं। अपने चचेरे भाई दिलावर आगा स्कूल में जाने की वजह से अपने काम नहीं आ रहे हैं, यह देखकर नाना दिलावर आगा के पिता मुनव्वर आगा के पास झूठी शिकायतें करते हैं। नाना और मुनव्वर आगा के बीच का संवाद देखने योग्य है-

'' 'क्या है मियाँ, कहो।'

'सरकार, दिलावर आगा का क्रिसतन स्कूल में जाना मुनासिब नहीं है।'

'क्यों मियाँ, क्यों ? खैर तो है ?'

'सरकार, दिलावर आगा को मैंने खुद कहते सुना है 'ऑल राइट, वेलडन।' '

'ये तो अंग्रेजी है मियाँ। इसका क्या मतलब हुआ ?'

'सरकार, मतलब मैंने पता लगा लिए हैं। जुबान पर लाते हुए डरता हूँ।'

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 78

'नहीं, नही, बताओ मियाँ। तुमने तो तजवीश पैदा कर दी।'

'हुजूर, खुदा न करे सात कुरान दरम्यान इसका मतलब है ईसाइयत सच्चा और पक्का मजहब है। मैं उसे कुबूल करूँगा।'

'हाय मियाँ, लाहौलविलाकुव्वत.... नाऊजेबिल्लाह.... ये दिलावर मियाँ कहते हैं ?'

'जी सरकार।' ''[1]

उपर्युक्त कथोपकथन में नाना की मुनव्वर आगा की मानसिकता को परिवर्तीत करने की प्रवृत्ति, इसके लिए धर्म का सहारा लेने की चतुराई स्पष्ट होती है। इस कथोपकथन से मुसलमानों की धर्म के प्रति अड़िग श्रद्धा और धर्मांतर का सख्त विरोध स्पष्ट होता है। इस कथोपकथन के परिणामस्वरूप स्कूल छोड़ने के लिए अभिशप्त दिलावर आगा काले धंधे करने की ओर प्रवृत्त होते हैं। अतः दिलावर आगा नई पीढ़ी के पात्र के रूप में उभरकर आते हैं जिससे उपन्यास एक नया मोड़ लेता है।

प्रस्तुत उपन्यास को अम्माँ और अब्बा के संवाद भी पुष्ट करते हैं। पटवारी चालाकी से अब्बा को फँसाकर उनकी चार बीघा जमीन अपने नाम करवाता है। अम्माँ और अब्बा के बीच हुआ संवाद दृष्टव्य है- '' 'तो पटवारी से कहलवाइये कि बैनामें में गलती से दूसरा नंबर चढ़ गया है....'

'अरे जनाब, वो इतना भोला नहीं है कि उसने चालाकी से जो लिया है वो वापर कर दे।'

'अल्लाह समझेगा उससे', अम्माँ ने कहा।

अम्माँ कुछ पल बाद बोली, 'देखिए, आपने जमीन बेच दी होती तो....' अब्बा ने गुस्से में उनकी बात काटी, 'जमीन तो अब भी न बेचूँगा चाहे पूरी-की-पूरी सरकार को चली जाए। मैं एक इंच न बेचूँगा।' ''[2]

उपर्युक्त अम्माँ-अब्बा के संवाद के माध्यम से लेखक ने पटवारी आदि अधिकारी वर्ग की भ्रष्टता, चालाकी, शोषणनीति के साथ-साथ अब्बा की अपने जमीन के प्रति होनेवाली

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 204
2. वही, पृ. 227

आस्था को तलाशने का प्रयास किया है। संक्षेप में कहना सही होगा कि उपन्यासकार ने कथोपकथन का प्रसंगानुकूल सफलतापूर्वक निर्माण किया है, जिससे उपन्यास को एक गरीमा प्राप्त हुई है।

2.8 देश-काल, वातावरण -

उपन्यास में यथार्थता और सजीवता लाने के लिए देश-काल, वातावरण का सफल संयोजन आवश्यक माना जाता है। देश-काल वातावरण के बारे में डॉ. त्रिभुवनसिंह जी की टिपण्णी दृष्टव्य है- ''घटनाओं, पात्रों और उनके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने का कार्य उपन्यास में देश, काल और वातावरण के द्वारा ही संभव हो पाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही देश-काल वातावरण की संज्ञा धारण करती है।''[1] देश-काल के प्रायः तीन भेद किए जाते हैं- सामाजिक, प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक। अतः इस दृष्टि से असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास के देशकाल, वातावरण के संयोजन को देखने का प्रयास करेंगे।

उपन्यास में ऐतिहासिक देश-काल, वातावरण विशेष रूप से उभरकर आया है। मुगलकालीन नवाब-महाराजाओं का रहन-सहन, दरबारियों का उठने-बैठने का ढंग, हरमों का वर्णन, बेगमों की शान, पोशाक, महलों का वर्णन, उद्यान, वाटिका इत्यादि के चित्रण में लेखक को विशेष सफलता मिली है। युद्ध, युद्ध-स्थल, किलों तथा गढीयों के चित्रण में भी लेखक ने अपनी पैनी दृष्टि का परिचय दिया है। एक गढ़ी का चित्रण दृष्टव्य है- ''गढ़ी क्या थी ये पूरा किला था। ककई ईटों की मोटी दीवारों पर बाहर की तरफ से मिट्टी की दीवारें उठाई गई थीं ताकि तोप के गोले ईटों की दीवारों को न तोड़ सकें। चार तरफ ऊँची बुर्जियाँ थीं और उन पर तोपें लगी थी। किले के चारों तरफ गहरे तालाब थे और अंदर आने के लिए जो रास्ता था वह गहरे तालाब पर लकड़ी के पटरों को जोड़कर बनाया गया था।''[2] अतः कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि उपरोक्त उद्धरण से पाठकों के आँखों के सामने उस गढ़ी का चित्रण आए बिना नहीं रहता। तात्पर्य लेखक ने देशकाल और वातावरण का सावधानी और संयम के साथ प्रयोग करते हुए हर ऐतिहासिक घटना को इसी तरह पुष्ट और वास्तव बनाया है।

---

1. डॉ. त्रिभुवनसिंह - हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, पृ. 287
2. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 55

प्रकृति का मानव की मानसिकता पर हमेशा प्रभाव रहा है। खासकर छोटे बच्चों पर प्राकृतिक सौंदर्य का असर अपनी अलग छाप छोड़ता है। उपन्यास में छोटे बच्चों की शरारतें, बारिश में भिगना, बिजली के कड़कने के बाद का भयानक सन्नाटा, मेंढ़कों और झींगुरों का आवाज आदि प्रकृति के जादू का चित्रण लेखक ने रुचि लेकर किया है। कथा-नायक के बचपन में काली सुनसान और डरावनी रातों में मूसलाधार बारिश होती थी। जिससे प्रभावित होकर कथानायक झूम उठते थे। ''बारिश के साथ-साथ तेज हवा के झोंके फुहार कमरे के अंदर तक आते थे और चादरें भीग जाती थी। किसी खिड़की या दरवाजे के पट भड़भड़ाते थे और लालटैन फक्क से बूझ जाती थी। अँधेरे में तड़ातड़ की आवाजों के साथ झीं-झीं और टर्र-टर्र और कभी-कभी क्रीऽऽकी-क्रीऽऽकी की आवाजें लगता था एक-दूसरे से मुकाबला कर रही हैं। हवा जब तेज होती तो अर्राटे सुनाई देते। कभी किसी पेड़ की डगाल टूटती तो चर्राहट गूँजती और डगाल के जमीन पर गिरने की आवाज आती।''[1] स्पष्ट है कि उपरोक्त देश-काल, वातावरण की मार्मिकता मानव-हृदय में नई उमंगों को उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हुई है। उपन्यासकार ने हर छोटी-बड़ी बात में देश-काल, वातावरण का अच्छी तरह से खयाल रखा है। जत्तन मियाँ और सत्ती के साथे संवाद में भी उन्होंने इस बात को अहमियत दी है। संवाद के सत्ती का चित्रण दृष्टव्य है- ''सत्ती चुपचाप सुनती रही। धीरे-धीरे उसके चेहरे पर वही रंग आया जो रहता था। वह थोड़ी रूकी तो लालटैन की रौशनी में उसकी नाक की कील का हीरा एक बार जगमगा उठा।''[2] निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि देश-काल, वातावरण के संबंध में उपन्यासकार असगर वजाहत जी ने संतुलित और सतर्क दृष्टि का परिचय दिया है। आवश्यक हर स्थान पर इसके प्रमाणबद्ध और सूक्ष्म प्रयोग के कारण उपन्यास बोझिल या अस्वाभाविक न बनकर कलात्मक एवं सार्थक हुआ है। अतः कहना गलत न होगा कि असगर जी ने देश-काल, वातावरण संबंधी एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

2.9 भाषा -

साहित्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है भाषा। रचनाकार अपने साहित्य में जो कुछ भी कहता है, वह अपनी भाषा के माध्यम से ही कहता है। भाषा मानव-जीवन के भावों

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 46
2. वही, पृ. 97

तथा विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा के बारे में डॉ. श्यामसुंदर दास अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं- ''भाषा ऐसे शब्द समुहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरे के मन तक पहूँचाने तथा उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है।''[1] मानव जैसे-जैसे विकसित होता गया भाषा का रूप भी परिवर्तित होता है। हर रचनाकार की भाषा उसकी रुचि तथा व्यक्तित्व के अनुरूप होती है।

असगर वजाहत जी के 'सात आसमान' उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा का सर्वत्र प्रयोग परिलक्षित होता है। पात्रों के चरित्र और सामाजिक स्थान के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। उनके उपन्यास में भोजपुरी, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा संस्कृत के तत्सम शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। उनकी भाषा में कुछ जगहों पर पहेलियाँ-मुखरियाँ तथा मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी मिलता है। असगर जी द्वारा प्रयुक्त भाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द प्राप्त होते हैं।

2.9.1 हिंदी-उर्दू का संमिश्र प्रयोग -

'सात आसमान' के सभी पात्र शिया मुसलमान हैं। शिया मुसलमानों की वैसे आम भाषा उर्दू ही है। प्रस्तुत उपन्यास में हिंदी के साथ उर्दू के इतने शब्द आए हैं कि, कभी-कभी लगता है यह उर्दू का उपन्यास तो नहीं है। लेकिन उपन्यास में हिंदी और उर्दू का समान रूप से प्रयोग हुआ है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी भी मानते हैं कि '' 'सात आसमान' ऐसी कथा-कृति है जिसमें हिंदी-उर्दू मिल कर सचमूच एक भाषा बन गई है।''[2] हिंदी-उर्दू की संमिश्र भाषा के यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

> ''ईद-बकरीद में लेन-देन भी होता था। गमी-खुशी में भी शामिल होते थे।''[3]
>
> ''जैसा आप मुनासिब समझिए।''[4] आदि।

---

1. श्यामसुंदर दास- साहित्यालोचन, पृ. 250
2. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस' मासिक पत्रिका, फ्रवरी, 1999, पृ. 89
3. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 18
4. वही, पृ. 85

2.9.2 भोजपुरी बोली का प्रयोग –

शिया मुसलमानों में कुछ लोग उर्दू के साथ-साथ भोजपुरी का भी प्रयोग करते हैं। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

''अब का जाने कौन है ? आजकल का कमी रह गई बदमाशों की ?''[1]

''हाँ, रात में वहीं बैठते हैं। एक-दुई बार हम देखा है।''[2]

'सात आसमान' के मैकु, मुश्ताक आदि पात्र भोजपुरी का प्रयोग करते हुए परिलक्षित होते हैं। यह भोजपुरी मूल भोजपुरी से अलग है।

2.9.3 बंबईयाँ हिंदी भाषा का प्रयोग –

प्रस्तुत उपन्यास में अल्प मात्रा में बंबईयाँ हिंदी का प्रयोग हुआ है, जिसका एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''अरे भइया, अब टैम बहुत खराब है।''[3]

बंबईयाँ हिंदी की यह विशेषता है कि उसमें उर्दू-अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों को तोड़ मोरोड़कर प्रयोग किया जाता है।

2.9.4 बोलचाल की भाषा का प्रयोग –

असगर वजाहत के पात्र आम सामान्य जनता से आए हुए हैं, वे सभी बोलचाल की स्वाभाविक हिंदी का प्रयोग करते हैं। इस उपन्यास में प्रयुक्त बोलचाल की हिंदी का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

''बाते बड़ी चटर-पटर करती है।''[4]

2.9.5 अवधी भाषा का प्रयोग –

'सात आसमान' उपन्यास में अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण प्रस्तुत है-

''मुंशीजी अइसा कसत हुआ।''[5]

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 249
2. वही, पृ. 249
3. वही, पृ. 37
4. वही, पृ. 187
5. वही, पृ. 15

2.9.6 अंग्रेजों द्वारा हिंदी का प्रयोग (अर्थात् अंग्रेजी शब्दों में बोली गई हिंदी) -

असगर जी ने अंग्रेज पात्रों के लिए हिंदी का अंग्रेजी स्वर में प्रयोग किया है, जिससे यह पात्र स्वाभाविक लगते हैं। डॉ. विक्टोरियाँ कहती है-

''ठीक है, टोम चलो.... अम अबी आटा है।''[1]

2.9.7 पहेलियाँ-मुखरियाँ -

पहेलियों और मुखरियों में से एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''अस्सी मन का लक्कड़, उस पर बैठा मक्कड़, रत्ती-रत्ती खाय, तो कितने दिन में खाय।''[2]

2.9.8 गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग -

उपन्यासकार ने पात्रों के अनुसार अशिष्ट भाषा का प्रयोग किया है।

''ये हराम की औलाद, यहाँ कैसी आ गई।''[3]

''अरे कंबख्तों, तुम्हें जिंदगीभर सोने का निवाला खिलाया है।''[4]

2.9.9 विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त शब्दावली -

असगर वजाहत ने 'सात आसमान' उपन्यास में उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। उनमें से कुछ शब्द प्रस्तुत हैं -

2.9.9.1 उर्दू शब्द -

असगर वजाहत हिंदी-उर्दू में कोई भेद नहीं मानते हैं। उपन्यास में उर्दू शब्दों की भरमार दिखाई देती है। उनमें से कुछ शब्दों को यहाँ प्रस्तुत किया है - ''हुकूमत''[5], ''अतराफ़''[6].

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 94
2. वही, पृ. 8
3. वही, पृ. 80
4. वही, पृ. 221
5. वही, पृ. 60
6. वही, पृ. 60

''अज़िज़''[1], ''दस्ताँ''[2], ''फ़ौलाद''[3], ''कसमापुर्सी''[4], ''इंतिक़ाल''[5], ''कसाई''[6], ''ख़वास''[7], ''आबाई''[8], ''अक़्सर''[9], ''अज़ब''[10], ''दर्ज''[11] आदि।

2.9.9.2 अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग -

असगर जी के उपन्यासों में अरबी और फारसी भाषा के शब्दों की बहुलता है। इसमें से उदाहरणस्वरूप कुछ शब्द प्रस्तुत हैं-

2.9.9.2.1 अरबी शब्द -

''जज्बा''[12], ''इल्जाम''[13], ''तकर्रूर''[14], ''माशाअल्लाह''[15], ''खिफ्फ़त''[16] आदि। उपन्यास में कुछ ऐसे वाक्य भी मिलते हैं जिसमें अधिकांश शब्द अरबी के मिलते हैं जैसे- ''तकल्लुफ, बनावट, नजाकत, अदब-आदाब, रख-रखाव, शानो-शौकत और वे सब मूल्य जो उन लोगों को विरसे में मिले थे।''[17]

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 151
2. वही, पृ. 57
3. वही, पृ. 56
4. वही, पृ. 74
5. वही, पृ. 198
6. वही, पृ. 176
7. वही, पृ. 128
8. वही, पृ. 51
9. वही, पृ. 147
10. वही, पृ. 165
11. वही, पृ.227
12. वही, पृ. 9
13. वही, पृ. 64
14. वही, पृ. 78
15. वही, पृ. 198
16. वही, पृ. 33
17. वही, पृ. 142

2.9.9.2.2 फारसी शब्द -

''ख्वाहिश''[1], ''खुदमुख्तार''[2], ''खाविंद''[3], ''गुमनाम''[4], ''फ़रायज़''[5] आदि।

2.9.9.3 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग -

कुछ अंग्रेजी शब्दों के द्वारा पात्रों में स्वाभाविकता और यथार्थता लाने का प्रयास किया है।

''प्रोडक्शन''[6], ''सिविलाइज्ड''[7], ''एटीकैट्स''[8], ''योर ऑनर''[9]। अनेक जगहों पर उर्दू बोली के प्रभाव के कारण कुछ अंग्रेजी शब्दों का अपभ्रष्ट रूप मिलता है। जैसे- मॅनेंजर का ''मनीजर''[10], ऑफीसर का ''अफसरान''[11] आदि।

2..9.9.4 संस्कृत शब्दों का प्रयोग -

संस्कृत शब्दावली का अल्प यात्रा में प्रयोग हुआ है। जैसे- ''आत्मा''[12], ''शुद्ध''[13] आदि।

2.9.9.5 मुहावरों - कहावतों का प्रयोग -

उपन्यास में आम लोगों में प्रचलित मुहावरें और कहावतों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

''गुड़ खाए गुलगुलों से परहेज''[14]

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 10
2. वही, पृ. 118
3. वही, पृ. 178
4. वही, पृ. 7
5. वही, पृ. 56
6. वही, पृ. 35
7. वही, पृ. 87
8. वही, पृ. 87
9. वही, पृ. 14
10. वही, पृ. 197
11. वही, पृ. 19
12. वही, पृ. 45
13. वही, पृ. 76
14. वही, पृ. 18

''एक म्यान में दो तलवारें''[1] आदि।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि असगर वजाहत के 'सात आसमान' में पात्रानुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है, जिसके कारण उपन्यास समाज और मानव-जीवन का यथार्थ चित्रण करने में सफल रहा है।

2.10 शैली -

आज उपन्यास में कथानक के अनेक रूप उपलब्ध हैं। परिणामतः उसकी अभिव्यक्ति की अनेक शैलियाँ भी उपन्यास-विधा में प्रयुक्त की जाती हैं। आत्मकथात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में उपन्यासकार ने उर्दू की प्रसिद्ध किस्सागोई शैली को प्रमुखता से अपनाया है। इसके साथ ही उपन्यास में वर्णनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग भी उन्होंने किया है। उन शैलियों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है-

आत्मकथात्मक शैली -

आधुनिक उपन्यास-साहित्य की यह एक विशिष्ट शैली है। ''इसमें उपन्यासकार कथा के नायक, नायिका या अन्य किसी भी पात्र का स्थान स्वयं ग्रहण करता है और इस प्रकार स्वयं प्रत्येक घटना का वर्णन करता चलता है।''[2] असगर वजाहत का 'सात आसमान' आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार उपन्यास का नायक है और उपन्यास के अन्य पात्रों को उन्होंने स्वयं देखा है या अनुभव के आधार पर उनकी जानकारी उपन्यास में प्रकट की है। 'सात आसमान' में बदलते मानव जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ ही नायक का भावुकतापूर्ण चरित्र सशक्त रूप में उभरकर आया है। खासकर अम्माँ की बीमारी, अब्बाँ मियाँ का लाचार बूढ़ापा और उनकी एकाकी, असहाय जिंदगी देखते समय नायक की भावुकता फूट पड़ी है। आत्मकथात्मक शैली में नायक अनुभव के आधार पर अनेक घटनाओं का ऐसा सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है कि हर प्रसंग सत्य घटना प्रतीत होती है। साथ ही अपने जीवन के हर प्रसंग के चित्रण में भी एक विलक्षण अलगाव झलकता है। नौकरी की तलाश में बंबई गए नायक के चित्रण में यह विशेषता देखने को मिलती है- ''नौकरी की तलाश में लोग बड़े शहरों

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 57
2. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, पृ. 72

14376

की तरफ भागते हैं। मैं भी बंबई गया। दो समंदर देखे- एक आदमियों का और दूसरा खारे पानी का। आदमियोंवाला समंदर पसंद नहीं आया। लेकिन किस्मत में शायद लिखा था कि इसी समंदर में गोते लगाने होंगे।''[1] संक्षेप में कहना सही होगा कि घटनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति और नायक की मनोभावनाएँ इन दोनों का विषयवस्तु में योग होने के कारण उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का सफल निर्वाह हो पाया है।

किस्सागोई शैली -

असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में उर्दू की प्रसिद्ध किस्सागोई शैली का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है। उपन्यास में एक प्रमुख कथा तथा गौण कथाओं के साथ ऐसे छोटे-छोटे किस्से आए हैं जिससे उपन्यास पठनीय और मनोरंजक बन गया है। इन किस्सों का कथानक के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंध है। किस्सों से भरे इस उपन्यास में अब्बू साब के बड़प्पन के किस्से, मुश्ताक के चतुराई के किस्से, बकरीदी की वीरता के किस्से, खालू के शरारतों के किस्से उपन्यास में औत्सुकता प्रदान करते हैं। इसी तरह वाजिद अलीशाह का गोमती नदी के नीचे छुपाया जवाहरात के खजाने का किस्सा, जैनुल आब्दीन खाँ के बहादुरी के किस्से, बादशाह बेगम की क्रूरता के किस्से तिलिस्म-जासुसी और ऐतिहासिकता का एहसास दिलाते हैं। स्पष्ट है कि 'सात आसमान' उपन्यास में किस्सागोई शैली विशेष रूप से उभरकर आई है।

वर्णनात्मक शैली -

सुविधाजनक होने के कारण यह शैली सर्वाधिक प्रचलित है। विषय विस्तार की आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। उपन्यासकार वर्णन करके अपनी बात स्पष्ट कर देता है। 'सात आसमान' उपन्यास में स्थान-स्थान पर उपन्यासकार ने अपने मंतव्य को स्पष्ट करने के लिए वर्णनात्मक शैली का चित्रण किया है। जैसे- मुहम्मद खाँ का घर उजड़ने की घटना में, लक्खू मियाँ और डॉ. विक्टोरिया के संबंधों का चित्रण करनेवाली घटना में, रखैल सत्ती की जत्तन मियाँ की मृत्यु के बाद हुई स्थिति का चित्रण करनेवाली घटना आदि अनेक घटनाओं में वर्णनात्मक शैली दिखाई देती है।

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 194

पूर्वदीप्ति शैली -

इस शैली में पात्र अतीत की घटनाओं तथा भावनाओं को वर्तमान में स्मरण करता है। अर्थात् इस शैली में अतीत की घटनाओं को वर्तमान में लाया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास 'सात आसमान' में नाना अपनी युवावस्था में बीताए सुनहरे दिनों की यादों से बुढ़ापे की दयनीय अवस्था में व्याकुल हो उठते हैं। पूर्वदीप्ति शैली का यह अच्छा उदाहरण है। मुश्ताक की गोश्त खाने की इच्छा को बेटे द्वारा झिड़कारने के बाद उसे जवानी में गोश्त का भरपूर लिया हुआ स्वाद याद आता है। गोश्त खाने को न मिलने के कारण व्याकुल मुश्ताक अपने अतीत की भरपेट खाए हुए स्वादयुक्त गोश्त के किस्से अब्बू साब को सुनाते हुए अतीत में खो जाते हैं- ''जब घी खूब कड़कड़ा जाता था तो पतली-पतली कटी-प्याज और लहसुन... वाह साहब वाह, क्या खुशबू उड़ती थी और उसके बाद हाथ का पीसा एकदम प्योर मसाला.... अब क्या बताएँ अब्बू मियाँ। मुश्ताक चटखारा लेने लगते थे। मसाला जब घी छोड़ने लगता था और कुछ रंग बदल जाता था तो उसमें साफ धुला हुआ गोश्त दो-दो, चार-चार बोटी करके डालता था.... इतना खाया है अब्बू मियाँ, इतना खाया है कि नीयत सेर हो चुकी है। अब ये लौंड़े साले क्या खिलाएँगे।''[1] निष्कर्षतः कहना सही होगा कि उपन्यास में कुछ पात्र अपने अतीत के मधुर, कोमल, स्नेहील क्षणों में खो गए हैं, जिससे उपन्यास में एक भावमय तरलता छाई है।

प्रतीकात्मक शैली -

उपन्यासकार अपनी बात को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग करता है। 'सात आसमान' उपन्यास में जगह-जगह पर प्रतीकात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। उदा. उपन्यास में एक कुआं है। उसके पानी में ऐसा जादू है कि जो भी उसका पानी पी लेता है, वही ठहर जाता है। लगता है किसी रोमांचक कथा का जादुई कुआं हो। लेकिन यह जादू नहीं, प्रतीक है। विश्वनाथ त्रिपाठी के मतानुसार, ''कुआं सीधी-साधी सुस्त रफ्तार, सैकड़ों सालों के थपेड़ों को सहती, हजारों तब्दीलियों को हजम करती जिंदगी का प्रतीक है। जो आया ठहर गया, पसर गया। यही का होके रह गया। बाहरी दुनिया से इस सामंती दुनिया का सरोकार बहुत कम है। यह अपने आप में ठहरी, पसरी और पूर्ण है। कुआं निहायत सटीक प्रतीक है आत्मतुष्ट सामंती

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 222

वातावरण का।''[1] उपरोक्त उद्धरण से उपन्यास में प्रतीकात्मक शैली का सफलतापूर्वक प्रयोग किया हुआ परिलक्षित होता है। निष्कर्षतः कहना सही होगा कि असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास शैली की दृष्टि से एक सफल कृति है।

2.11 उद्देश्य (प्रतिपाद्य) -

उपन्यास का निर्माण सौद्देश्यपूर्ण होता है। पहले उपन्यास का मूल उद्देश्य मनोरंजन माना जाता था। आधुनिक काल में उद्देश्य की दृष्टि से भी परिवर्तन हुआ है। आज मनोरंजन गौण पक्ष बन गया है तो सामाजिक संबंधों, समस्याओं को यथार्थ रूप में उद्घाटित करना ही उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य बन गया है। उद्देश्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए श्रीमती बसंती पंत जी लिखती हैं- ''उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यासकार का मुख्य दायित्व मानवीय चेतना के निरंतर गतिशील स्तरों को यथार्थ रूप में रूपायित करना है।''[2] स्पष्ट है कि मानवीय चेतना को व्यापकता के साथ यथार्थवादी भूमि पर प्रतिष्ठापित करनेवाली रचना उद्देश्य की दृष्टि से सफल बन सकती है। असगर वजाहत का उपन्यास 'सात आसमान' इसी पृष्ठभूमि पर उद्देश्य की दृष्टि से एक सफल उपन्यास लगता है।

यह उपन्यास अनेक उद्देश्यों के साथ हमारे सामने प्रस्तुत होता है। इसमें मुगलकाल से लेकर स्वातंत्र्योत्तर काल तक की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था की संक्रमणकालीन स्थिति को चित्रित करना, मुगलकालीन तथा अंग्रेजकालीन शासन-व्यवस्था पर प्रकाश डालना, जमींदार वर्ग की स्थिति को अंकित करना, जमींदार-काँग्रेस संबंधों को राजनीति के परिप्रेक्ष्य में ढालना आदि कई उद्देश्य इस उपन्यास में उद्घाटित होते हैं। फिर भी एक शिया मुसलमान परिवार का उदय और उसके कारूणिक अंत को यथार्थ के धरातल पर चित्रित करना ही उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य रहा है। पुरानी पीढ़ी ने अतीत की विरासत को तन्मयता के साथ संभालकर रखा है। लेकिन नई पीढ़ी अपना गाँव, अपनी जमीन, माँ-बाप, अपनी संस्कृति सभी को पीछे छोड़कर महानगर की चकाचौंध दुनिया को अपना रही है। अब्बा को अपने पुरखों की ड्योढ़ी वीरान होने की चिंता है, तो कथानायक और उनके भाई को महानगर की सुविधाओं और अवसरों के

---

1. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस' मासिक पत्रिका, फरवरी, 1999, पृ. 88
2. श्रीमती बसंती पंत - हिंदी उपन्यास रचना-विधान और युग-बोध, पृ. 36

स्रोतों से लगाव है। नायक, उनके भाई और अब्बा की आकांक्षाओं के द्वंद्व में अब्बा की हार होती है और यह प्रतीक समाज के भविष्य का सूचक है। एक परिवार का परिवर्तन के भुकंप से धराशायी होनेवाली प्रक्रिया को उपन्यासकार ने विस्तार के साथ चित्रित किया है। अन्य उद्देश्यों का भी विस्तार किया गया होता तो शायद इस उपन्यास का रूप कुछ-कुछ महाकाव्यात्मक हो जाता।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. कृति को साकार रूप देने में जिन विधियों, ढंगों, तरीकों और रूढ़ियों का प्रयोग किया जाता है, वे सारी बातें औपन्यासिक शिल्प के अंतर्गत आती हैं।
2. 'सात आसमान' शीर्षक, कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल वातावरण, भाषा, शैली, उद्देश्य आदि सभी तत्त्वों के शिल्पगत अध्ययन की दृष्टि से एक सफलतम और महत्त्वपूर्ण कृति है।
3. 'सात आसमान' यह शीर्षक आकर्षक होने के साथ-साथ कौतुहलपूर्ण भी है। सात पीढ़ियों के प्रतीक रूप में आए इस शीर्षक का कथावस्तु के साथ गहरा संबंध होने के कारण उसकी सार्थकता और भी बढ़ गई है।
4. दो खानदानों के सात पीढ़ियों का चित्रण और पाँच भागों में विभाजित कथावस्तु के युगानुरूप संगठन में लेखक को विशेष सफलता मिली है। लेखक ने उपन्यास में हर कालखंड की ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ उस युगीन मानव के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।
5. लेखक ने पात्रों के चरित्रांकन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। मुख्य और सहायक पात्रों के साथ उपन्यास में दर्जनों गौण पात्रों की भरमार दिखाई देती है। सभी पात्रों का सृजन प्रसंगानुकूल और सौद्देश्यपूर्ण है। उपन्यास में लेखक पात्रों की भावना, संवेदना, भीषण अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति में पूर्णतः सफल रहे हैं।
6. लेखक ने कथोपकथन का प्रसंगानुकूल सफलतापूर्वक निर्माण किया है। उन्होंने कथावस्तु को सहज, सरल तथा स्वाभाविक बनाने के लिए समय, वातावरण एवं पात्रानुकूल

कथोपकथन का प्रयोग किया है। कथोपकथन से उपन्यास में सजीवता और रोचकता आई है।

7. घटनाओं, पात्रों और उनके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने के लिए उपन्यास में देश-काल, वातावरण का सफल संयोजन हुआ है। उपन्यास में ऐतिहासिक, प्राकृतिक और सामाजिक देश-काल वातावरण विशेष रूप से उभरकर आया है।

8. असगर जी का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। हिंदी-उर्दू के संमिश्र प्रयोग से लेकर भोजपुरी, अवधी, फारसी, बंबईयाँ हिंदी, बोलचाल की हिंदी आदि का प्रयोग आवश्यकतानुरूप हुआ है। उर्दू, अरबी, फारसी, भोजपुरी के साथ अंग्रेजी और संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी सहजता से किया है।

9. असगर वजाहत जी का 'सात आसमान' आत्मकथात्मक अर्थात् 'मैं' शैली में लिखा उपन्यास है। इस उपन्यास में उर्दू की प्रसिद्ध किस्सागोई शैली के साथ वर्णनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, प्रतीकात्मक शैली आदि का भी प्रमुखता से प्रयोग किया है।

10. अनेक घटनाओं के द्वारा बदलते मानव जीवन को चित्रित करनेवाला यह उपन्यास अपने उद्देश्य की पूर्ति में निश्चय ही सफल रहा है।